

वसाधारए

EXTRAORDINARY

्रभाग **II—सन्द** 3—-स्वपसन्द (1)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

1914

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 296] नई विल्ती, हानिवार, विसम्बर 15, 1973/प्रात्तावण 24, 1895 No. 296] NEW DELHI, SATURDAY, DECEMBER 15, 1973/AGRAHAYANA 24, 1895

इस भाग में भिग्न पृष्ठ सं या दी जाती है जिससे कि यह धलग सक्कन के कप में एका जा सके। Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 21st November, 1973.

THE COMPANY'S LIQUIDATION ACCOUNT (AMENDMENT) RULES, 1973.

- G. S. R. 523 (E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 555, feed with sub-section (i) of section 642 of the Companies Act, 1956, (1 of 1956) the Central Government hereby makes the following rules further to amend the Company's Liquidation Account Rules, 1965, namely:—
 - 2. These rules may be called the Company's Liquidation Account (Americant) Rules, 1973.
- a. In the Company's Liquidation Account Rules, 1965, for Annexure II, the following Annexure shall be substituted, namely:—

"ANNEXURE---II"

[See Rule 9(5)]

THIS DEED OF INDEMNITY made 11 is	
day ofbetween	*********
day of between]son of
resteing at hereinafter referred to as the principal party (which expression shall us pugnant to the context include his heirs, executors, administrators.]	
nerematter referred to as the principal party (which expression shall us	less excluded by or re-
pugnant to the context include his heirs, executors, administrators.	egal represertatives and
manigns) of the first part	[Please

party and the surety hereby jointly and severally undertake and bind themselves to pay to the said Regional Director on demand and without demur the said sum of Rs......togetherwith interest at 6% per annum, in the event of the said sum being found to be not paymable to the principal party (and the decision of the Government in this behalf shall be final and binding on the parties) and the principal party and the surety hereby further undertake that they will at all times indemnify and keep the said Regional Director indemnified and harmless from all liabilities with regard to the payment made to the principal party as aforesaid and against all actions, claims and demands, costs damages and expenses which may be levied, brought or made against the said Regional Director by any person by reason of the payment being made by the said Regional Director of the said sum as aforesaid.

IN WITNESS whereof the parties hereto have set their respective hands the day and the year first above written. Signature of the Principal Party

Signed, sealed & delivered by the Principal party who is personally known to me and signed in my presence.

His occupation & Address.

The surety is personally known to me and signed in my presence.

ACCEPTED.

Signature of Wirness His occupation & Address

Regional Director: Company Law BoardRegion.

Sec.	8(40)	THE GAZETTE OF INDIA EXTRAORDINAR	¥ 1763
Notes	:		
	(I) Here qu	note the name of the claimant who is the Principal Party.	
	(II) Here o	quote the name of the Surety, if any.	
	(III) Here	quote the name of the company in respect whereof the paym	ent is being made.
		portion in brackets may be retained where applicable i.e. in case not stand to the credit of the principal party.	es where the amoun
	(V) Here st	state the reasons why the claimant could not receive money	now claimed earlier.
	(VI) In the be pro that er	e case of an executant who is not well conversant with Englisoperly read over and explained by a competent person weffect.	sh, the deed should tho should attest to
Pl	esse strike o	off whatever words are not necessary or appropriate.	
		CERTIFICATE OF SOLVENCY	Y
		ertify that Shri	ersonally known to
Date	*	Signature of the Gazet Officer or a member of M	
		Designation with the stamp of	office.
		p	No. 2/19/71-CL.V]
		Р. В. М	ENON, Jt. Secy.
		ृविषि, स्थाय झौर कम्पती कार्य मन्नारूय	
		(कम्पनी कार्यविभाग)	1
		ग्नथि सूचना	
		मई विस्ती 21, मदम्बर, 1973	
		कम्पनी का परि-समः।पन साता (संशोधन) निरम, 1973	
सरक	उपधारा (1	० कि॰ 523 (ग्र).—कम्पनी श्रिधिनियम, 1956 (1956 का 1) के साथ पठित, उपधारा (3) द्वारा प्रदल शक्तियों का प्रयोग का परि-समापन खाक्षा नियम, 1965 में ग्रीर संशोधन करने के लिए [:—	ग करते हुए, केन्द्रीय
	(1)) इन नियमों का नाम कम्पनी का परि-समापन खाता (संगोधन)	तियम, 1973 है।
	(2)) कम्पती का परि-समापन खाता नियम, 1965 में, उपाबंध 2 सिखित उपाबन्ध रखा जाएगा, दर्थात् :	के स्थान पर, मिम्न-
		"छपाश्चनम 2"	

[नियम 9(5) देखें] (कृपया टिप्पण (1) वेचें....)

जिसे इसमें इसके पश्चात् मुख्य पक्षकार कहा गया है (जिस पद के भन्तर्गत, जब तक कि संदर्भ में भूष वर्जित या में विषय न हो, उसके वारिस, निष्पादक, प्रकासक, दिधिक, प्रतिनिधि और समनुर्देश स माते हैं);				
विवतीय पक्षकार के रूप में) मा १) रे से			
विलेख ; यत : (कृपया टिप्पण (III) देखे) शिमिटेड का समापम हो गर	वा			
भीर यतः उक्त कम्पनी के शासकीय समापक के हाथ में या उसके नियंक्षाधीन धन-राशि, का ऐसा भ्रतिशेष जो लेनवारों को देय ऐसे भ्रदावाकृत लाभांशो भीर/या भ्रमिदायी को प्रितिदेय ऐसी भ्रतिरा भ्रास्तियों के मर्ख हैं, जो उनके देय हो जाने के पश्चात् छह मास से भ्रधिक की भ्रवधि एक भ्रदावाकृ भीर/या भ्रवितरित पर्द हैं/या रही हों, भारत सरकार के लोक खाते में के कम्पनी के परि-समापन खाते संदत्त भीर जमा कर दिया है;	ध- स			
यत : कम्पनी के परि-समापन खाते में जमा की गई रकम के ग्रन्तगैत लेनदार/ग्रामिदायी व हैसियत में श्री(उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसके नाम में रकम जम् है) को लाभांश/ग्रवितरित चास्तियों के रूप में देय				
भ्रौर यत : मस्य पक्षकार ने				
भ्रोर यतः मुख्य पक्षकार(कृपथा टिप्पण (भी) देखें)			
भौर यत : मुख्य पक्षकार या उसकी भौर से किसी भ्र ःय ध्य क्ति ने	•			

भौर यत : मुख्य पक्षकार ने उक्त कम्पनी से सम्बद्ध उक्त कम्पनी के परिन्समापन खाते में से अपने द्वारा दावाकृत उक्त धन-राशि के दिए जाने के लिए पूर्वीशत प्राटेशिक निदेशक से निदेश किया है;

भीर यत : केन्द्रीय सरकार से प्रत्यायोजन के आधार पर (कम्पनी शक्षितिस्म) 1950 की आरा 637(1) (ख) के साम पठित अधिसूचना सं० सा०ना नि०-71, हार्य खा कार दिसे, 1966 देखे) उक्त प्रादेशिक निदेशक, मुख्य पक्षकार द्वारा इस प्रकार दावाहर राहि के दिए जाने के लिए कोई आदेश देने के लिए उक्त प्रधिनियम की धारा 555 (7) (ख) के दर्भान सक्षम ई मीर यह ऐसा आदेश विर जाने के प्रयोजन के लिए यह भ्रमेक्षा करता है कि क्षतिपूर्ति विलेख का निष्पादन मुख्य पक्षकार द्वारा निम्न प्रकार किया जाए :

श्रव यह विलेख इस बात का साक्ष्य है कि मुख्य पक्षकार द्वारा पूर्वोक्त रूप से किए गए व्यपदेशन के और उक्त ग्रपेक्षा के श्रनुसरण में तथा उक्त प्रादेशिक निदेशक द्वारा मुख्य पक्षकार की——रु० की राशि के दिए जाने के प्रतिफलस्थरूप मुख्य पक्षकार श्रीर प्रतिभू, मांग करने पर श्रीर बिना किसी पूर्वापत्ति के उक्त प्रादेशिक निदेशक को——रूप की उक्त राशि श्रीर साथ ही मुख्य पक्षकार को श्रवंदेय मानी गई उक्त राशि (श्रीर इस निमित्त सरकार का विनिश्चय श्रीर साथ ही गा और पक्षकारों पर ग्रावद्धकर होगा) की दशा में, छह प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से व्याज, देने के लिए एनद्द्वारा स्थय को संयुक्तन : श्रीर पृथक्त : वचनबद्ध श्रीर ग्रावद्ध करते हैं तथा मुख्य पक्षकार श्रीर प्रतिभू एतद्द्वारा यह श्रीर वचन देते हैं कि वे मुख्य पक्षकार को पृवोंक्त रूप से किए गए सदाय से सम्बद्ध सभी दायिक्षों से ग्रीर सभी श्रनुयोजनों, दावों श्रीर मांगों, खर्चों, नुकहानों श्रीर व्यापों से जो उक्त प्रादेशिक निदेशक द्वारा उक्त राशि का पूर्वोक्त रूप से संदाय कर दिए जाने के कारण उक्त प्रादेशिक निदेशक की विद्व किसी व्यक्ति द्वारा उद्गृहन, किए जाएं, लाएं जाएं या विष् जाएं, सभी रुपयों पर उक्त प्रादेशिक निदेशक की किसी व्यक्ति द्वारा उद्गृहन, किए जाएं, लाएं जाएं या विष् जाएं, सभी रुपयों पर उक्त प्रादेशिक निदेशक की किसी व्यक्ति द्वारा उद्गृहन, किए जाएं, लाएं जाएं स्वर रखेंगे।

इसके साक्ष्यस्वरूप इसके पक्षकारों ने मर्वप्रथम लिखित दिन श्रीर वर्ष को अपने श्रपने हस्ताक्षर कर दिए हैं।

मख्य पक्षकार के हस्ताक्षर ।

मुख्य पक्षकार द्वारा हस्ताक्षरित, मुद्रांकित भार परिदत्त जिसको में वैयक्तिक रूप से जानता हूं श्रीप उसने भेरी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए हैं।	
साक्षी के हस्ताक्षर——————	—प्रतिभु के हस्ताक्षर
उसकी उपजीविका श्रौर पता । प्रतिभू को मैं वैयक्तिक रूप	•
से जानता हुं ग्रीर उसने मेरी उपस्थिति में हस्ताक्षर किए	
₹1 €	स्वीकृत
मान्नी के हस्ताक्षर	
	त्रादेशिक निदेसक
उसकी उपजीविका श्रीर पता	
	————————————————————————————————————

- (1) यहां उस दावेदार का नाम लिखें जो मुख्य पक्षकार है।
- (2) यहां प्रतिभू, यदि कोई हो, का नाम लिखें।

हिप्पण:--

- (3) यहां उस कम्पनी का नाम लिखे जिसके बारे में सदय किया जा रहा है।
- (4) जहां तागू हो तहां कोष्ठकां में के भाग बनाए रखें जाएं अर्थात् ऐसी दणात्रों में जहां रकम मुख्य पक्षकार के नाम में जमा न हो ।
- (5) यहां वे कारण लिखे जिनकी वजह से दावेदार इस समय दायाष्ट्रत धन को प्राप्त नहीं कर सका ।

(6) ऐसे निष्पादों की दशा में जो अंग्रेजी भली प्रकार नहीं जानका है। विलेख उसे किसी सज़न व्यक्ति द्वारा ठीक क्षरह पढ़ कर सुनाया जाना चाहिए भीर समझाया जाना चाहिए, जिसको क्षदर्भ की अनुप्रमाणित भी करना चाहिए। कृपया वे शब्द काट दें जो आवस्यक या समुचित नहीं हैं।

श्रीयन क्षमसा, प्रमाण पत्र

वह प्रमाणित किया जाता है कि—— के निवासी श्रीर श्री————————————————————————————————————	के पुत
•	——————- द० की राशि
सारीख :	
	राजपस्नित भिधिकारी, राजस्य भिधिकारी या नगरपालिका के सदस्य के हस्ताक्षर ।
	पदाभिधान श्रौर कार्याभय की मुद्रा ।
	[सं० फा० 2/19/71—सी० ए ल० 5]
	पी० बी० मेनन, संयुषत संवित्र ।